B.A. Honours part-I, paper-II

इंगलैण्ड का इतिहास

Q. इंगलैण्ड में बड़ा पिट की उपलब्धियों का मूल्यांकन करें।

Ans → बड़ा पिट का जन्म सन् 1708 ई० में वेस्टमिनस्टर शहर में हुआ था। उसका जन्म गरीब परिवार में हुआ था। उसके माता-पिता वास्तव में गरीब थे। यह ठीक है उसका दादा टॉमस पिट मद्रास का गवर्नर था, तो पर भी उसके माता-पिता की स्थिति अच्छी नहीं थी। फलस्वरूप बड़ा पिट का लालन-पालन राजकीय स्थिति में नहीं हुआ था। अतः हम कह सकते हैं कि वह गरीबी में पलकर महान पुरुष बना।

शिक्षा → इटन स्कूल में उसने प्रारंभिक शिक्षा पाई। वह बचपन से ही मेधावी था। उसकी बुद्धि प्रखर थी। स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद उसने ट्रिनिटी कॉलेज में शिक्षा पाई। उसका कॉलेज जीवन भी बहुत शानदार रहा। कॉलेज से निकलने के बाद उसने एक छोटी सी नौकरी कर ली। वह अश्व सेना में झंडा वाहक के स्थान पर बहाल हुआ।

पार्लियामेण्ट का सदस्य → जब बड़ा पिट 27 वर्ष हुआ तो उसके भाग्य ने पलटा खाया। वह 1735 ई० में पार्लियामेंट का सदस्य बना और ओल्ड सारम नाम के एक मौरूसी रॉटन बौरो का प्रतिनिधि चुना गया। वह शुरू से ही वालपोल का विरोधी था। राजा भी उसकी कटु आलोचना से तंग था। कटु आलोचना के चलते उसे सेना से बाहर कर दिया गया। परन्तु राजकुमार और राष्ट्र दोनों को पिट की कमी खलती रही। समय ने पलटा खाया और सप्तवर्षीय युद्ध ने सारे इंगलैण्ड में हलचल पैदा कर दी। लोग बैचेन हो उठे। सबों की आँखें बड़ा पिट की ओर लग गयी। अतः ऐसा

Scanned with CamScanner

B.A. Honours Paper - II

कहा जा सकता है कि सप्तवर्षीय युद्ध ने बड़ा पिट के विकास के मार्ग को प्रशस्त कर दिया। सप्तवर्षीय युद्ध के समय इंगलैण्ड में न्यूकैसल मंत्रिमंडल था जो सप्तवर्षीय युद्ध का भार वहन करने में सर्वथा असमर्थ था। इसलिए सन् 1757 ई० में बड़ा पिट को मंत्रिमंडल निर्माण करने का मौका दिया गया। पिट ने तहेदिल से युद्ध का सफल संचालन किया। जिससे इंगलैण्ड की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। पिट का कार्य वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण था। लेकिन उसके भाग्य ने फिर पलटा खाया। सन् 1761 ई० में स्पेन विरोधी नीति के प्रश्न पर उसने राजा और मंत्रियों का समर्थन नहीं किया जिसका फल बुरा निकला। राजा ने उसे पदत्याग करने की आज्ञा दे दी। फलत: उसे पदत्याग करना पड़ा।

पुन: प्रधानमंत्री के पद पर → अमेरिका की उपनिवेश की समस्या बहुत उलझी हुई और गंभीर हो गई। इंगलैण्ड में अशांति और अव्यवस्था का साम्राज्य हो गया। इस बुराई को दूर करने के लिए पुन: लोग पिट की ओर ताकने लगे। अत: सन् 1776 ई० में पिट फिर प्रधानमंत्री बनाया गया। उसने बड़े ही लगन के साथ प्राय: सभी दलों को मिलाकर एक मन्त्रिमंडल बनाया और 24 महीने तक सफलतापूर्वक काम किया। एकाएक पिट रोगग्रस्त हो गया। तब उसके स्थान पर कौपाअबमशर्न का कुमेमार यउनबीड नामक एक कुशल व्यक्ति

इंगलैण्ड का इतिहास

सम्भालने लगा। उसने शीघ्र ही शीशा, कागज और चाय के आयात पर अमेरिका में टैक्स लगा दिया। पिट को यह बात अच्छी नहीं लगी। अतः उसने खुल कर इसका विरोध किया। साथ-ही-साथ पिट ने मिडलसेक्स के चुनाव में जो अन्याय किया गया था उसका भी उसने विरोध किया। लेकिन उसके विरोध का कोई फल नहीं निकला। बीमारी की वजह से अब तक पिट काफी कमजोर हो गया था। दिन पर दिन उसका स्वास्थ्य गिरता चला गया। वह स्वयं भी अब अपने को शासन भार सम्हालने में अयोग्य समझने लगा। अतः विवश होकर उसे सन् 1768 ई० में पदत्याग कर देना पड़ा।

पिट तहेदिल से अमेरिका के साथ सहानुभूति रखता था परन्तु दूसरी ओर राजा अमेरिका के विरोध को कुचल देना चाहता था। इस तरह से दोनों के विचार और नीति में एकता नहीं थी। अतः जब राजा ने पिट को पुनः मन्त्रिमण्डल निर्माण करने का निमन्त्रण दिया तो उसने स्वीकार कर लिया क्योंकि वह उस मन्त्रिमण्डल में शामिल होना नहीं चाहता था। अन्त में बड़ा पिट ने स्वयं अपना स्वतंत्र मन्त्रिमण्डल निर्माण करने की इच्छा राजा के सम्मुख प्रदर्शित किया, लेकिन राजा ने अस्वीकार कर दिया। इस समय तक पिट बूढ़ा हो गया था। उसकी उम्र 77 वर्ष की हो गई थी। अंतः में उसकी मृत्यु सन् 1778 ई० में हो गई।

पिट के चारित्रिक गुण → बड़ा पिट इंगलैण्ड के महान राजनीतिज्ञों में से एक था। अपने जमाने का वह अकेला आदर्श व्यक्ति था। वह उस समय के दूषित वातावरण से बहुत ऊपर था। वह एक महान नेता था। उसमें नेतृत्व करने की बहुत

बड़ी क्षमता थी। वह भाषण देने की कला में माहिर था। विषम से विषम परिस्थिति, समस्या और संकट में भी वह उत्साह से भरा रहता था। चिन्ता उसके निकट नहीं सटती थी। लेकिन वह विरोधी प्रकृति का था। उसे हठ, बनावटीपन और तड़क-भड़क से बहुत घृणा था। उसे असली से प्रेम और नकली से विरोध था। वह किसी का विरोध एकदम नहीं बर्दाश्त करता था। वह एक साधारण और गरीब परिवार में जन्म लेकर भी अपनी योग्यता और कुशलता के बल पर इंगलैण्ड का प्रधान मन्त्री बनकर इंगलैण्ड का भाग्य विधाता बना। अतः वह इतिहास के महान व्यक्तियों में एक था। प्रशिया का शासक फ्रेडरिक महान उसके गुणों से अत्यधिक प्रभावित हुआ था। एक दिन उसके मुँह से एकाएक यह निकल पड़ा था कि "इंगलैण्ड को बहुत दिनों से प्रसव पीड़ा थी और पिट के रूप में सुयोग्य व्यक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है।"

बड़ा पिट की विभिन्न सेवाएँ निम्न है—

(I) सार्वजनिक जीवन-स्तर का उत्थान
(II) सुसुप्त राष्ट्रीय भावना की जागृति

(III) राष्ट्र की रक्षा
(IV) प्रजातन्त्र का समर्थन
(V) साम्राज्यवाद का भी समर्थन और
(VI) पिट की नीति से देश की क्षति।

इंगलैण्ड की प्रगति और विकास को देखकर ही यह कहा कि — "If Walpole made England happy, Pitt the Elder made it great."

D. JHA

Scanned with CamScanner